पाठशाला – एक सतर्क आवश्यकता

- डॉ. स्वर्णलता जैन, नागपुर

पाठशाला, गुणों की शाला, सुख की शाला, संयमित मौज-मस्ती की शाला, मुक्ति दिलाने वाली शाला; यह, वह स्थान है, जहाँ बच्चे के जन्म के दिन के बाद से लेकर सल्लेखना से पूर्व तक की उम्र वाला जो भी पढ़ना चाहे, उनके लिए शिक्षा का केंद्र है। पाठशाला के बाहर आती हुई तोतली भाषा में णमो अरिहंताणं... शुद्धातम है मेरा नाम... सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे... गुड्डू एक लड्डू को पाकर... तोता तोता तू क्यों रोता... में से ये आवाजें आती हैं, तब वह जन मानव को आंदोलित करती हैं। पाठशाला के संस्कार बाल-मन के जीवन में उचित आहार, उचित संस्कार, उचित विचारों के आधार पर उसके जीवन की नींव रखती है। तब वह बालक जगत में एक आदर्श व्यक्ति की पहचान बन जाता है।

भोगों से अरुचि रखने वाले अध्यापकों का सुखमय जीवन जब बालक देखता है, तब वह मन ही मन अपने आप को समर्पित कर देता है और उनके द्वारा शिक्षा ग्रहण करता है, जो भोगों से मुक्त कर दिलाता है; क्योंकि कहा कि है **या विद्या सा विमुक्तये** अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति स्वरूप आत्मा को बताकर शरीर से भी मुक्त करावे।

बचपन से ही बच्चों में हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह को पाप बताया गया है और पाप वही है जो जीव को दुख में डालें या अपने नैतिक मूल्यों से गिरा दे; तथा पाप का फल भोगने के लिए नरक, तिर्यंच गति में जाना पड़ेगा। वर्तमान में तिरस्कार और अपमान भोगना पड़ेगा ऐसे असंतुष्ट मन से लौकिक जीवन में भी सुख नहीं भोग पाएगा और पारलौकिक जीवन अर्थात् आत्म साधना भी कैसे कर पाएगा? क्योंकि मनुष्य जीवन का उद्देश्य भागों में रमना नहीं है वरन् मनुष्य, शरीर में स्थित आत्म-स्वरूप को देखना है; कहा भी है – सुख दुख में हम समता धारें, रहें अचल जिमि सदा अटल... प्रेमभाव हो सब जीवों में... गुणग्रहण का भाव रहे नित... इत्यादि।

मेरी आत्मा इस शरीर से पहले भी थी और इस शरीर के नष्ट होने के बाद भी रहेगी इसलिए बच्चों! शरीर से भिन्न अजर-अमर आत्मा को पहचानो, तुम्हें बहुत सुख मिलेगा। देखो! हमारे भगवान ने घर-परिवार-राजमहल-नौकर-चाकर सब छोड़कर आत्म-साधना की तो वे सुखी हो गए और हम उनकी पूजा करते हैं। यदि हमें सुखी होना है तो हमें उनकी तरह अपनी आत्मा की साधना करनी चाहिए - गोरा नहीं काला नहीं भगवान आत्मा... आत्मा तो निश्चय से सुख स्वरूप है सुख कारण है...।

बच्चों को शिक्षा देने के लिए बहुत ही सरल पद्धति से पाठों का विभाजन किया गया है जिनमें जैन आगम के सिद्धान्तों को अनुयोग शैली से गर्भित किया गया है। हर भाग में तकरीबन 8 पाठ हैं जिनमें प्रथमानुयोग की शिक्षा, महापुरुषों की जीवनी से; चरणानुयोग को शिक्षा, नैतिक शिक्षा-शुद्ध आहार-शुद्ध विचारों से; करणानुयोग की शिक्षा, कर्म सिद्धांत से तथा द्रव्यानुयोग की शिक्षा जीव-अजीव की पहचान से कराई जाती है। आत्मा के स्वरूप को बताने वाली स्तुतियों जैसे – शुद्धातम है मेरा नाम..., वीतराग-सर्वज्ञ-हितंकर..., अति-पुण्य-उदय मम आया..., सकल-ज्ञेय-ज्ञायक तदपि... एवं पूजाओं जैसे – देव-शास्त्र-गुरु पूजा, सिद्ध पूजा, सीमन्धर पूजा आदि के माध्यम से का अर्थ एवं पद्धति सिखाई जाती है। बालकों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा और उसका प्रयोग करना सिखाया जाता है।

पाठशाला के लाभ –

1. जीवन में असीमित भोग विलास से कंट्रोल करती है।
2. अच्छे बुरे की पहचान कराती है।
3. छोटे बड़े का सम्मान करना सिखाती है।
4. भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार कराती है।
5. कंठ विद्या को प्रोत्साहित करती है।
6. बाल मन को सही दिशा में विकसित कर सन्मार्ग दिखाती है।
7. भगवन्तों या सर्वज्ञता पर अटूट विश्वास दिलाती है।
8. ज्ञान की आराधना-आत्मा आराधना के लिए प्रेरित करती है।
9. सब जीवों से प्रेम करना एवं दीन दु:खी जीवों पर करुणा करना सिखाती है।